मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 60, मई(प्रथम), 2019

प्यार के पडाव- सही व गलत माईने

लवविवेक मौर्या उर्फ "हेमू"

आधुनिक समय में प्यार का पड़ाव, क्या होगा? कैसा होगा ?कब आयेगा? सारे प्रश्नों का जवाब एक साथ पा पाना बहुत मुश्किल है । मानो! सारे जवाब मिल गये तो समय का सदुपयोग हुआ, अगर एक का ही जवाब मिला और दूसरा रह गया है या फिर किसी का जवाब नहीं मिला तो आप का समय खराब हुआ; तो शायद आप इस पड़ाव के माईनों को समझ ही नहीं पाये । सही पड़ाव हुआ तो जिन्दगी जीने के माईने बदल जाते हैं और गलत हुआ तो जिन्दगी बस बोझ बन ढोने को रह जाती है ।

हम इन्हीं दो पड़ावों की चर्चा करना चाहते हैं और आपको इन दोनों पड़ावों के अंतर से रूबरू कराने जा रहे हैं ।

पहला पड़ाव - सही माईना

कहते हैं, प्यार सही माईने में सिर्फ एक बार ही होता है । उसमें हम अपना सब कुछ अपने हमप्यार के ऊपर कुर्बान कर देते हैं । पहला प्यार किसी भी तरीके से हो सकता है एक नजर में, एक मुलाकात में, उसके हर एक अदा पे भी ।

हम जिसे पहली बार अपना बना लेते हैं, उसे दिल में बसा लेते हैं; तो वही मेरी मंजिल और मेरी दुनिया बन जाता है । फिर चाहे कितने भी लोग सफर में मिलते रहें, उसके अलावा और किसी से मतलब नहीं रहता । सच्चे प्रेमी एक दूसरे पर अपना सब कुछ वारने के लिए तैयार रहते हैं ।

"प्यार सच्चा हो तो लाखों लोग दुश्मन हो जाते हैं
आशिकी का आ भी न आता हो पर,
आशिकों के पहरेदार बन जाते हैं"

हम सही नाव, सीधी धार में जब चलाते हैं तो अपना पड़ाव किनारे पर लग जाता है ।प्यार को बढ़ावा देने में निगाहें बड़ा काम करती हैं । जब नजरें आपस में मिलती हैं तो वह सीधे दिल तक पहुँचती हैं और अपने हमसफर की तस्वीर दिल में बना देती है । एक-दूसरे के दिल में बसने के लिए एक पल ही काफी होता है ।

जैसे एक उदाहरण है अगर आप कहीं कोई दुकान पर कपड़ा खरीदने जाते हैं तो आपके सामने कई गुणवत्तापूर्वक कपड़ आते हैं, अगर आपको एक ही नजर में पसंद आ गया तो ठीक, अगर एक नजर में पसंद न आया तो कितना भी महँगा और कितना भी अच्छा हो आप वह खरीदोगे नहीं । यही प्यार में निगाहों का काम होता है ।

एक बात कपड़ों में adjustment हो सकता है पर प्यार में नहीं हो सकता ।

प्यार तो लाखों लोग करते हैं, मगर प्रेम उन्ही का सफल होता है जो आपस में विश्वास कायम रखते हैं और एक-दूसरे के लिए जीना-मरना जानते हैं । दोनों एक-दूजे के सुख-दुःख , खुशी- गम तथा कठिन सफर में भी साथ नहीं छोड़ते ।

" संग-संग जीना तेरे ,संग-संग मरना
कैसा भी हो सफर फिर भी संग-संग रहना "

खुश हो तो तेरी मुस्कुराहट बनूँ
गम हो तो तेरे आँसू बनूँ
तू थक न जाये कहीं सफर में चलते-चलते
संग -संग तेरे मुझे है चलना
दुनिया की नजरों से तुझे बचाने को
खुद ही तेरा काला टीका बनूँ
दुनिया की अग्नि परीक्षा से तुझे गर गुजरना पड़े
तो, संग -संग तेरे मुझे है जलना
जलकर तेरे संग मैं फिर प्यार की एक मिसाल बनूँ

<u>दूसरा पड़ाव - गलत माईना</u>

कहते हैं, प्यार को बहुत लोग मजे के तौर पर करते हैं, जिससे उनका समय अच्छे से व्यतीत हो सके और उनको मानसिक तथा शारीरिक प्रताड़ना न झेलनी पड़े ।

ये पड़ाव आधुनिक समय का बेहतर चलन बनता जा रहा है । इसमें लोग प्रेम तो बहाने के लिए करते हैं । बस ये दिखना चाहिए कि लड़के के साथ लड़की का और लड़की को लड़के का साथ चाहिए । यहाँ पर एक लड़के के पास एक हो तो कोई बात हो, पर यहाँ पर तो नंबर बनाने रहते हैं, उसी प्रकार लड़कियों को भी लड़के पटाने के नंबर बनाने होते हैं- एक, दो, तीन ,चार----------

यही पड़ाव प्यार के गलत माईनों को साबित करता है, जिससे लोगों का प्यार के ऊपर से भरोसा उठ जाता है । फिर लोग प्यार को अहमियत नहीं देते और प्यार करने वाले दूसरों की नजरों में एक मजाकिया नाटक जैसे लगते हैं ।

आधुनिक समय में कुछ लोगों ने प्यार को इतना गंदा बना दिया है कि लोग प्यार नाम से ही दूर भागते हैं । वो दिल नहीं लगाना चाहते पर शारीरिक तालुक जरूर बना लेते हैं , उनसे पूछो कि क्या प्यार है, तो जवाब आयेगा- शायद था , पता नहीं ।

ऐसे प्यार के माईने किसी भी किनारे पर नही ले जाते हैं, बस ले जाते हैं तो बरबादी के कगार पर ।

“इश्क को सिर्फ अधूरे अक्षर समझ लिये
जिसे चाहा उसे बाहों में भर लिये
प्यार के व्याकरण तुम समझ न पाये
हवस के सन्दर्भों को रट-रट के पढ़ लिये“

“चाहत, हवस में कोई फर्क न रहा
दुनिया में प्यार का कोई अर्क न रहा
प्यार का अर्क तो दिखावे के लिए लगाते हैं लोग
इश्क का सही माईने में कोई तर्क न रहा“

शायद हमारे इस लेख से आपको ऐतराज भी हो लेकिन हमने दोनों माईनों को एक-एक करके बतलाया जिससे प्यार के नजरिये को अच्छा पढ़ा जाये व उसे बेहतर तरीके से पेश किया जाये ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें